Padma Shri

SHRI VINAYAK LOHANI

Shri Vinayak Lohani is the Founder and President of Parivaar (parivaar.org), a humanitarian organization established in 2003 with its chief institutions and projects based in West Bengal, Madhya Pradesh, Chhattisgarh and Jharkhand.

2. Born on 12th April, 1978, Shri Lohani received his Bachelor of Technology degree from the Indian Institute of Technology, Kharagpur in 2000, and MBA degree from the Indian Institute of Management, Calcutta in 2003. He was driven by the inspiring exhortation of Swami Vivekananda of selfless service to those in suffering and make one's life one with them. He resolved to devote himself for serving 'Divine in Man' as taught by Swami Vivekananda. Immediately after passing out of IIM in 2003, with just 3 children in a small rented building on the outskirts of Kolkata, he started Parivaar. But he had no resources. So in order to kickstart his mission, till the level of 15 children at Parivaar, he used to take some lectures for students appearing for Management entrance examinations and through that could meet the expenses of the set-up. Gradually people began to be inspired by this dedicated service and started to support the initiative and the number of children at Parivaar grew.

3. At the end of 2004, Parivaar could purchase its own land to develop its permanent campus. Parivaar's mission and theme began to attract dedicated youth, many of whom joined Parivaar as resident workers and began to become bearers of this mission. As on January 2024, Parivaar's Bengal Residential Institutions have more than 2100 resident children and is considered to be a model institution for caretaking and overall development of children from destitute backgrounds in a residential setting. It is also the largest free residential institution for children from impoverished backgrounds in the whole of West Bengal.

4. Shri Lohani after 14 years of relentless service in Bengal and with many youth inspired to join him, expanded Parivaar's footprints into Madhya Pradesh in 2016. From 2017 onwards it has set up, as on 10lhFebruary 2025, 834 Seva Kutirs (Educational and Nutrition Centers) which are serving more than 55 thousand children in selected impoverished tribal pockets in 18 districts of Madhya Pradesh and one district of Chhattisgarh and Jharkhand each. There are 4 residential institutions in 3 districts of Madhya Pradesh which are serving about 1350 resident children which too are scaling up. From the year 2021, several health initiatives have also been started. 93 free 24*7 Ambulance Services in selected impoverished tribal regions in 23 districts of Madhya Pradesh are serving more than 6500 persons every month. Vision Restoration Program has been started for poor elderly from rural/tribal area. Under this more than 5800 eye camps have been organised in 36 districts of MP and one each in UP and Rajasthan, serving more than 6.5 lakh persons and conducted more than 73 thousand surgeries free of cost in collaboration with some eye hospitals. 21 Mobile Medical Clinics have been started in 8 districts covering 982 villages in highly impoverished tribal areas, treating and serving free medicine to more than 50 thousand persons every month.

5. Shri Lohani is the recipient of numerous awards and honours. He has been awarded the National Award for Child Welfare 2011 presented by the Hon. President of India at the Rashtrapati Bhavan. He is also the recipient of Sanskriti Award 2011, country's premier award for young achievers in 2011 from the Former President of India Dr APJ Abdul Kalam. Shri Lohani was awarded 'Sri Sathya Sai Award' by the Vice President of India, Dr Venkaiya Naidu, in 2018. Shri Lohani was awarded the 'Distinguished Alumnus Award' of both IIM Calcutta and IIT Kharagpur, in 2011 and 2014, respectively.

श्री विनायक लोहनी

श्री विनायक लोहनी परिवार (Parivaar.org) के संस्थापक और अध्यक्ष हैं। यह एक मानवीय संगठन है जिसकी स्थापना वर्ष 2003 में हुई थी तथा इसकी प्रमुख संस्थाएं और परियोजनाएं पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और झारखंड में स्थित हैं।

2. श्री लोहनी का जन्म 12 अप्रैल, 1978 को हुआ। इन्होंने वर्ष 2000 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर से अपनी बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी की डिग्री और वर्ष 2003 में भारतीय प्रबंधन संस्थान, कलकत्ता से एमबीए की डिग्री प्राप्त की। श्री लोहनी, स्वामी विवेकानंद के प्रेरक उपदेश पीड़ितों की निस्वार्थ सेवा करें और अपना जीवन उनके लिए समर्पित कर दें, से प्रेरित हुए। इन्होंने स्वामी विवेकानंद द्वारा सिखाई गई 'मनुष्य में विद्यमान दिव्य' की सेवा के लिए स्वयं को समर्पित करने का संकल्प लिया। वर्ष 2003 में आईआईएम से उत्तीर्ण होने के तुरंत बाद, कोलकाता के बाहरी इलाके में एक छोटे से किराए के भवन में सिर्फ 3 बच्चों के साथ उन्होंने परिवार की शुरुआत की। लेकिन उनके पास कोई संसाधन नहीं थे। इसलिए अपना मिशन शुरू करने के लिए, परिवार में 15 बच्चों के रहने तक, वह प्रबंधन प्रवेश परीक्षाओं में शामिल होने वाले छात्रों को कुछ व्याख्यान देते थे ताकि इसके माध्यम से इस पूरे सेट–अप के व्यय को पूरा कर सके। धीरे–धीरे लोग इस समर्पित सेवा और पहल से प्रेरित होने लगे तथा परिवार में बच्चों की संख्या बढ़ गई।

3. वर्ष 2004 के अंत में, परिवार अपने स्थायी परिसर के निर्माण हेतु अपनी ज़मीन खरीद सका। परिवार के मिशन और थीम ने ऐसे युवाओं को आकर्षित किया जिनके भीतर समर्पण का भाव था, इनमें से कई लोग परिवार से जुड़ गए और वहीं रहकर काम करने लगे तथा इस मिशन के ध्वजवाहक बने। जनवरी 2024 की स्थिति के अनुसार, परिवार के बंगाल आवासीय संस्थानों में 2100 से अधिक बच्चे स्थायी रूप से यहां रह रहे हैं और यह माना जाता है कि यह संस्थान आवासीय प्रारूप में निराश्रित बच्चों की देखभाल और समग्र विकास के लिए आदर्श संस्थान है। यह पूरे पश्चिम बंगाल में गरीब पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों के लिए सबसे बड़ा निःशुल्क आवासीय संस्थान भी है।

4. श्री लोहनी ने बंगाल में 14 वर्षों की अथक सेवा के बाद और कई युवाओं को उनसे जुड़ने के लिए प्रेरित करने के उपरांत, वर्ष 2016 में परिवार का विस्तार मध्य प्रदेश में किया। वर्ष 2017 के बाद से इसने 10 फरवरी 2025 तक 834 सेवा कुटीर (शैक्षणिक और पोषण केंद्र) स्थापित किए हैं, जो मध्य प्रदेश के 18 जिलों तथा छत्तीसगढ़ और झारखंड में एक–एक जिले के कुछ गरीब जनजातीय क्षेत्रों में 55 हजार से अधिक बच्चों को सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। मध्य प्रदेश के 3 जिलों में 4 आवासीय संस्थान हैं जो लगभग इनमें रह रहे 1350 निवासी बच्चों को सेवाएं प्रदान कर रहे हैं और इनकी संख्या भी बढ़ रही है। वर्ष 2021 से कई स्वास्थ्य पहल भी शुरू की गई हैं। मध्य प्रदेश के 23 जिलों के चयनित गरीब जनजातीय क्षेत्रों में 93 एम्बुलेंस चौबीसों घंटे निशुल्क सेवाएं प्रदान कर रही हैं जिसका लाभ हर महीने 6500 से अधिक व्यक्ति ले रहे हैं। ग्रामीण/जनजातीय क्षेत्रों के गरीब वृद्ध लोगों के लिए विजन रेस्टोरेशन कार्यक्रम की शुरूआत की गई है। इसके अंतर्गत, मध्य प्रदेश के 36 जिलों में 5800 से अधिक नेत्र शिविर तथा उत्तर प्रदेश और राजस्थान में एक–एक शिविर का आयोजन किया गया है, जिनमें 6.5 लाख से अधिक लोगों ने इसका लाभ लिया है तथा कुछ नेत्र अस्पतालों के सहयोग से 73 हजार से अधिक निःशुल्क ऑपरेशन किए गए हैं। अत्यंत गरीब जनजातीय क्षेत्रों के 982 गांवों को कवर करते हुए 8 जिलों में 21 मोबाइल मेडिकल क्लीनिक शुरू किए गए हैं, जिनमें हर महीने 50 हजार से अधिक लोगों का उपचार किया जाता है तथा उन्हें निःशुल्क दवा दी जाती है।

5. श्री लोहनी के नाम कई पुरस्कार और सम्मान हैं। इन्हें राष्ट्रीय बाल कल्याण पुरस्कार 2011 से सम्मानित किया गया है, यह पुरस्कार इन्हें राष्ट्रपति भवन में भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया। इन्हें वर्ष 2011 में भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के करकमलों से युवा उपलब्धियों के लिए देश का प्रमुख पुरस्कार, संस्कृति पुरस्कार 2011 भी मिल चुका है। श्री लोहनी को वर्ष 2018 में भारत के उपराष्ट्रपति डॉ. वेंकैया नायडू द्वारा 'श्री सत्य साईं पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। श्री लोहनी को क्रमशः वर्ष 2011 और 2014 में आईआईएम कलकत्ता और आईआईटी खड़गपुर दोनों के 'प्रतिष्ठित पूर्व छात्र पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।